ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 860-861
www.allresearchjournal.com
Received: 22-05-2017
Accepted: 23-06-2017

Pooran Lal Meena
Research Scholar
Dept. History, Delhi
University, Delhi, India.

Correspondence
Pooran Lal Meena
Research Scholar
Dept. History, Delhi
University, Delhi, India.

विश्व समुदाय और बौद्ध संस्कृति

Pooran Lal Meena

Introduction

विश्व के मध्य भाग में बौद्ध धर्म के आगमन से पहले लोग अर्थात् जनसमुदाय (जनसमूह) मुख्यतः दो भागों में विभाजित और संगठित था। जो चलवासी और रोजगारहीन थे, जो मंयूरिया और रूस के उत्तरी स्टेपीज के भाग में संगठित थे। ये तुर्किस्तान के मरूद्धानों में फैले (बसे हुए) थे। ये चलवासी समुदाय पुनः दो भागों में विभाजित थे जो पहला दक्षिणी रूस या जो कि आर्यो की प्रारसंगिक शाखा सीथियन समुदाय से संबंधित था। दूसरा जो आंतरिक और बाह्य मंगोलिया/मंचूरिया और तुर्क, मंगोल सीमा क्षेत्र तक फैला हुआ था। पूर्वी क्षेत्र के लोग ईरानियन समुदाय की उत्पत्ति से संबंध रखते थे। आर्यन भाषी समुदाय के लोग पामीर से लेकर चीन तक प्रसारित थे। दक्षिणी भागों में ये लोग सदियों से चलवासी और रोजगार हीन जीवन यापन करते आ रहे थे।

चीन में दूसरी सताब्दी ई.पू. में जब रेशम मार्ग को खोल दिया तब मिशनरियों और तीर्थ यात्रियों ने चीन, भारत, मध्य एशियाई देशों की यात्राएँ की। मध्य एशिया से बौद्ध धर्म के साथ–साथ भारतीय संस्कृति चीन पहुँची। [1]

सातवीं शताब्दी में तारिम बेसिन में बौद्ध धर्म पुष्पित हुआ। पश्चिम में तारिम बेसिन, कशगरिया के साथ ही यारकंद, खोतान, तुमकुश, भकसु और किजिल, पूर्व में लोलन, कारासान और दुनदुंग में बौद्ध धर्म प्रसारित हुआ। [2]

इसी समय बहुत से सांस्कृतिक धार्मिक ग्रंथों का भारतीय–यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ, जिनमें आर्यन भाषा समुदाय के लोग सबसे आगे थे। मंगोलीयाई शासकों ने रेशम मार्ग को अपने नियंत्रण में कर लेने के बाद बौद्ध धर्म का उत्तरी चीन, मंगोलिया में प्रसार तीव्र गति से हुआ। ऐसा ही कुछ अफगानिस्तान में अरबों के आगमन तक बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ।

गोंदोफर्नीस के तखत–ए–बही शिलालेख [3] जिसमें कुजुल कडफिसिस को राजकुमार के रूप में दर्शाया गया है। दो दशकों के बाद इस कुषाण शासक ने संपूर्ण महाराजा की उपाधि प्राप्त की और जो 136 वर्षों के कुसाण शासन में कुशल शासक सिद्ध हुआ और उसने राजाओं के राजा और भगवान का पुत्र की उपाधि धारण की। [4] इस कुषाण शासक का शासन हिंदुकुश के देशों के दोनों तरफ और मुख्यतः मध्य एशिया पर सांस्कृतिक प्रभाव बनाए रखने के लिए पहचाना जाता है। कुषाणों के समय में चीनी व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों जो कि चीन भारत के मध्य हुए को जोड़ने का कार्य किया। इस समय में राजनीतिक एकीकरण के कारण लोगों में नृजाति पृष्ठभूमि के लोगों की भाषा संस्कृति धर्म इन सभी का महत्वपूर्ण योगदान है। कुषाणों का यह शक्तिशाली साम्राज्य जो कि अरल सागर से अरब सागर तक राजनीतिक एकता और स्थिरता प्राप्त कर चुका था। जिस समय बैक्ट्रिया में कुषाण साम्राज्य मध्य एशियाई लोगों और उत्तर भारतीय जिसमें पूर्वी बिहार और सिंध तथा बलूचिस्तान जो कि अब पाकिस्तान के दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित है। उत्तर और उत्तर–पूर्वी जिसमें कि कश्मीर पश्चिमी वैक्ट्रिया और पार्थिया इसके भाग थे।

कुषाणों के समय हेलेनिक, ईरानियन और भारतीय कला का एक मिलाजुला अद्भुद रूप सामने आया। [5] बौद्ध धर्म के विकास में कुषानों में सर्वाधिक योगदान कनिष्क का रहा है। उसी के समय में चौथी बौद्ध संगीती कुंडलवन अथवा जालंधर में हुई थी। [6] कुषाणों के समय में महान रेशन मार्ग जो कि चीन से चलकर मध्य रोमन साम्राज्य तक जाता था जो यह कूटनीतिक मार्ग कनिष्क के समय में ही बौद्ध धर्म के प्रसार में सहायक बना। [7]

चीनी यात्री ह्वेन सांग के अनुसार चतुर्थ बौद्ध संगीती में वसुमित्र अध्यक्ष चुने गए। एक अन्य विद्वान परमार्थ के अनुसार काला कात्यायानी पुत्र जिन्होंने ज्ञान प्रस्थान सूत्र लिखा था को अध्यक्ष चुना गया। इसी संगीति में हीनभान तथा महायान संप्रदायों का प्रादुर्भाव हुआ। श्रीलंका तथा अन्य कई देशों में महायान शाखा का प्रसार हुआ। जबकि हीनमान को भारत में महत्व मिला। पहली सदी में नागार्जुन नालंदा विश्वविद्यालय के प्रमुख बनाए गए थे किंतु चीनी यात्री ह्वेन सांग के समय में

वहां के प्रमुख शीलभद्र थे। तिब्बती विद्वान पद्मसंभव नालंदा से ही तिब्बत गए। उन्होंने आठवीं सदी में तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रसार–प्रचार किया उस समय विक्रमशिला विश्वविद्यालय तांत्रिक बौद्ध अथवा वज्रयान का प्रमुख केन्द्र बना। हूण शासक मिहिरकुल ने छटी सदी में बहुत से बौद्ध संघों को नष्ट कर दिया।

युथानचांका जो कि एक चीनी यात्री था उससे यह आशा की जाने लगी कि वह अपने पूर्वजों की भांति कुशल परंपरावादी ढंग का साहित्यकार बनेगा। [8]

तुर्फान गोबी के रेगिस्तान में स्थित है। आज यहाँ जीवन नहीं है, परंतु युवांग–चांग के समय में वहाँ जीवन की कोलाहल थी। उसके अनुसार जनता वहाँ की बौद्ध थी और समृद्ध आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक जीवन विताती थी। वहाँ पर तुखारी भाषा की एक उप भाषा बोली जाती थी। समरकंद से यात्रा करता हुए चीनी यात्री दुर्गम पर्वत श्रंखलाओं को पार करने के बाद पश्चिमी तुर्क साम्राज्य की दक्षिणी सीमा पर पहुँचा। वहाँ का राजा तर्दुशद जो एक सद्धालू बौद्ध था। बैक्ट्रिया में बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार संभवतः अशोक के धर्म प्रचारकों द्वारा किया गया था। युवान–चांग के अनुसार बलख और बैक्ट्रिया में उसने अनेक विहार देखे थे, यहाँ बौद्ध हीनयान भिक्षु रहते थे। यहीं पर प्रज्ञाकर नामक भिक्षु निवास करते थे। उनके साथ युवान–चांग ने वार्तालाप किया था। बामियान का भी युवानचांग ने आँखों देखा उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसने बामियान में दस बौद्ध विहार देखे और उनमें कई हजार बौद्ध भिक्षु रहते थे। वामियान में ही उसने बौद्ध की विशाल मूर्ति देखी थी। जिसकी ऊँचाई 35–52 मीटर के मध्य थी। बामियान हीनयानियों का बड़ा केंद्र होने के बावजूद भी युवान–चांग ने वहाँ महायानी बौद्ध अनुयायियों को भी देखा। [9]

अफगानिस्तान के काबुल से कुछ किलोमीटर दूरी पर बामियान घाटी स्थित है, इसी घाटी में बुद्ध की सर्वाधिक ऊँची बौद्ध प्रतिमा स्थित है। यहाँ ईस्वी सन् के आरंभिक वर्षों में चट्टानों को काटकर कई बौद्ध मूर्तियाँ बनाई गईं। सन् 2000 तक आते आते तत्कालीन समय की तानाशाही तालिबान सरकार ने वामियान के बुद्धा की मूत्रियों को तोड़ दिया।

सातवीं शताब्दी तक अफगानिस्तान में बौद्ध धर्म फलता–फूलता रहा। इसी सदी के अंत तक आते–आते बौद्ध धर्म को इस्लाम धर्मानुयायियों ने अपदस्त कर दिया। जुलाई 1999 में अफगानिस्तान की तालिबान सरकार ने बामियान की बौद्ध प्रतिमाओं को तोड़ दिया। उनका वर्क था कि यहाँ बौद्ध धर्मानुयायियों की संख्या नगण्य है। कुछ ही समय पश्चात् तालिबान शासकों ने इन बौद्ध प्रतिमाओं का इस्लाम की बेइज्जती के प्रतीक के रूप में माना। तत्कालीन समय के ''द् न्यूयार्क टाइम्स'' के अनुसार मूर्ति तोड़ने वाले लोग कई पीड़ियों पहले बौद्ध धर्म के मतानुयायी थे। [10]

Reference

1. Bagchi: India and China Greenwood Press, West Port Connectieut 1975, 6
2. Stein: The thousand Buddhas: Ancient Buddhist Paintings from the cave temples of Tun-Huang, London, 1921-22; A waley. A catalogue of paintings recovered from Tunhurg by sir Aurl stain, Oxford, 1931
3. Sten Konow: Cll. ll (I), pp. 57 ff.
4. Ref. Panjtar inscription (122) ibid, pp. 67 ff; and Taxila Silver Scroll inscription (136) ibid pp. 70 ff.
5. Ref. Puri: Kushanas, 218.
6. Kern: Manual of Buddism, Reprint, Delhi 1968, 121.
7. See: Along the Ancient Silk Routes – Introduction by Herbert Hertel New York, See also Gafurov: Kushan Civilization and World Culture in central Asia in Kushan Period 1982; 18:76
8. Watters J. On Youn – churang's Travels in Indian (Photopritn edited, New Delhi, 1973; I, 112, II, 131.
9. B.N. Puri, Buddhism in central Asia, 298.
10. 18th March, The New York Times Washington, 2001.